सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-32 अंक-11 | 7 से 21 जून, 2017 | मुख्य संपादक : कॉमरेड प्रभास घोष | कुल पृष्ठ 8 | मूल्य : 2 रुपये

मवेशियों को बेचने पर रोक लगाने के गैर-लोकतांत्रिक व निरंकुश कदम की एसयूसीआई (सी) ने की कड़ी निन्दा

जानवरों को पशु मेलों और पशु बाजारों में बेचने पर रोक लगाने के गैर-लोकतान्त्रिक और निरंकुश कदम की कड़ी निन्दा करते हुए एसयूसीआई(सी) के महासचिव श्री प्रभास घोष ने 27 मई को जारी बयान में कहा :

बीजेपी-नीत केन्द्र सरकार के उस निरंकुश तथा अति गैर-लोकतान्त्रिक फैसले की हम कड़ी निन्दा करते हैं जिसमें पशु क्रूरता निरोधक (पशुधन व्यापार नियमन) नियम के नाम पर पशु मेलों तथा पशु मण्डियों से धार्मिक बलि या बूचड़खानों में कटने के लिए बछिया, बछड़े, गाय, साण्ड, ऊँट, भैसे, भैसा आदि पशुओं की खरीद-बिक्री पर रोक लगा दी गयी है। मवेशियों के अनियंत्रित खरीद-बेच बंद करने की आड़ में यह निषेधाज्ञा असल में सभी भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकारों में ही हस्तक्षेप है। जाति-धर्म का लिहाज किये बिना सभी लोगों के सवैंधानिक अधिकारों के ही हनन का इस निषेधाज्ञा में साफ संकेत है। न केवल इसको आदेशात्मक बना देना कि कौन क्या खाएगा बल्कि यह लोगों को अपनी पसन्द का खाना खाने से रोकने के साथ-साथ उन्हें प्रोटीनयुक्त भोजन खाने से भी वंचित करना है। इसके अलावा सरकार का यह मनहूस कदम एक बहुत बड़े तबके के जीविकापार्जन के अवसर को भी छीन लेगा। यह दर्शाता है कि आरएसएस-बीजेपी अपने उग्र फासीवादी- साम्प्रदायिक एजेण्डे को लागू करने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है जो एजेण्डा भारत की मेहनतकश जनता की एकता और भाईचारे के लिए अत्यधिक खतरनाक है। सरकार के इन भयावह कदमों को नाकाम करने के लिए सभी सद्बुद्धि सम्पन्न और जनतांत्रिक बोध रखने वाले लोगों को अपने तमाम मतभेद भूला कर एकजुट होने की जरूरत है।

कश्मीर में घोर अमानवीय कृत्य में संलिप्त फौजी अफसर को पुरस्कृत करने की एसयूसीआई(सी) ने की कड़ी निंदा

एसयूसीआई(सी) के महासचिव श्री प्रभास घोष ने 24 मई को जारी बयान में कहा : देश के समझदार व सही सोच रखने वाले लोग यह देख कर अवाक रह गए कि कश्मीर में सेना के एक मेजर ने 9 अप्रैल को जिन आन्दोलनकारियों पर आरोप लगाया गया है कि वे उस पर और उसकी टुकड़ी पर पत्थर फेंक रहे थे, उनसे बचने के लिए उसने जिस तरह एक आम नागरिक को मानव ढाल के तौर पर जीप के सामने बांध कर घुमाया वह घोर क्रूर अमानवीय कृत्य है। इस वीभत्स घटना पर कश्मीरियों का नफरत से उबल पड़ना उचित ही है। वे विस्मय से हक्के-बक्के रह गए हैं जब इस असभ्य घटना के बारे में उनकी न्यायसंगत चिंता की घोर उपेक्षा अगर न भी सही फिर भी उनके धिक्कार की परवाह न कर उल्टे उस मेजर को ''प्रति-उग्रवाद पर सतत प्रयासों के लिए'' प्रशंसा पत्र दिया गया है—जबकि जरूरत थी मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन के कसूर में उसे सजा देते। यह कृत्य घाव पर नमक छिड़कने के तुल्य ही जनता के लिए अपमानजनक है। कश्मीर के वर्तमान विस्फोटक हालात को यह और भी उलझा देगा और भारतीय फौज व सरकार के खिलाफ जनता की नफरत और क्षोभ को और भी बढ़ा देगा।

एसयूसीआई(सी) इस घोर निंदनीय घटना का कड़ा प्रतिवाद करती है और इसकी पुनरावृत्ति न हो —यह सुनिश्चित करने की भारत सरकार से मांग करती है।

पहली कक्षा से पास-फेल प्रणाली तुरंत चालू करो, नहीं तो उठायेंगे आन्दोलन की लहर

आन्दोलन के मैदान से एआईडीएसओ का ऐलान

कोलकाता (प.बं.) : शिक्षा का सर्वनाश बहुत हो चुका। बस, अब और नहीं चलेगा। पहली कक्षा से पास-फेल प्रणाली तुरंत चालू करने की मांग को लेकर 29 मई को पश्चिम बंगाल विधानसभा के गेट नं. 6 पर पुलिस के लाठीचार्ज की परवाह न करते हुए ऑल इण्डिया डीएसओ के आह्वान पर सैकड़ों छात्र आन्दोलन में कूद पड़े। उनमें से कई लहूलुहान हो गए। 70 गिरफ्तार हुए, 56 घायल हुए। ऑल इण्डिया डीएसओ ने 30 मई को राज्य भर में धिक्कार दिवस मनाया।

आइसिन कम्पनी के संघर्षरत मजदूरों पर हुए लाठीचार्ज की एआईयूटीयूसी ने की कड़ी निंदा

रोहतक (हरियाणा) : रोहतक स्थित आइसिन कम्पनी के संघर्षरत मजदूरों पर गत दिवस हुए पुलिस दमन और लाठीचार्ज की एआईयूटीयूसी के प्रदेशाध्यक्ष कॉमरेड सत्यवान ने 1 जून को जारी एक बयान में कड़ी निंदा करते हुए उनके संघर्ष को पूरी तरह जायज बताया और भाजपा सरकार व श्रम अधिकारियों से उनकी समस्याओं का तुरंत समाधान करने, निकाले गए श्रमिकों को काम पर वापस लेने, उनकी यूनियन को पंजीकृत करने की मांग की।

कॉमरेड सत्यवान ने कहा कि अब तक सरकारी रवैया स्पष्ट दर्शा रहा है कि उसे प्रदेश के मजदूरों, किसानों व मेहनतकशों के हितों से कोई सरोकार नहीं है। वह देशी-विदेशी कम्पनियों के एजेण्ट की तरह बर्ताव कर रही है। हरियाणा प्रदेश के जनसाधारण को इस मसले पर गंभीरता से मंथन करना चाहिए। आजादी के 70 सालों में कांग्रेस से लेकर भाजपा तक सभी सरकारें मुट्ठी भर पूंजीपतियों-धनकुबेरों का मुनाफा बढ़ाने के लिए श्रमिकों सहित सभी मेहनतकशों जो बहुसंख्यक हैं, उनके हितों की बलि चढ़ा रही हैं। यह अत्यंत दुखदायी है। इसका विरोध करते हुए मजदूरों के न्यायसंगत अधिकारों व हितों की बचाने के लिए सभी को अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए।

सोनीपत की युवती से रोहतक में हुए गेंगरेप व हत्या पर रोष जताया

रोहतक (हरियाणा) : यहां सोनीपत की युवती से गेंगरेप व हत्या काण्ड में संलिप्त दुष्कर्मियों को सजा-ए-मौत देने की मांग पर 17 मई को कैण्डल मार्च निकाला गया। मेडिकल सर्विस सेण्टर रोहतक युनिट के आह्वान पर पं भगवतदयाल शर्मा पोस्ट ग्रेज्यूएट इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल सायन्स के एमबीबीएस, बीडीएस, बीएससी नर्सिंग, फार्मेसी आदि विभागों के हजारों छात्र व रेजिडेंट डाक्टर जुलूस में शामिल हुए। इसका नेतृत्व प्रमुख रूप से एमएससी की रोहतक युनिट के संयोजक डॉ. दीपक ग्रेवाल व डॉ. आशिष दहिया ने किया।

सभा को एआईडीएसओ के हरियाणा राज्य सचिव कॉ. हरीश कुमार सैनी ने भी सम्बोधित किया।

रोहतक : कैण्डल मार्च में शामिल डाक्टर व मेडिकल छात्र

भिवानी : कैण्डल मार्च में शामिल महिलाएं व नौजवान

भिवानी (हरियाणा) : सोनीपत की युवती से रोहतक में हुए गेंगरेप व बर्बरतापूर्ण हत्याकाण्ड के खिलाफ ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन(एआईएमएसएस) और एआईडीवाईओ के संयुक्त बैनर तले 19 मई को यहां शहर में महिलाओं व छात्र-नौजवानों ने केण्डल मार्च कर रोष जताया। महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अत्याचार व अपराधों की रोकथाम करने, पीड़ित परिवार को इन्साफ देने और प्रदेश में महिलाओं के मान-सम्मान की रक्षा व जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग करते हुए नारे लगाये। छात्र-नौजवान, महिलाएं और आम लोग दिनोद गेट स्थित धर्मशाला में एकत्रित हुए। वहां से केण्डल जुलूस निकाला जो सराय चौपटा, घंटा घर होते हुए नेहरू पार्क पहुंच कर विरोध सभा में तब्दील हो गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सोनीपत की युवती से ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

सभा को एआईएमएसएस की नेत्री श्रीमती रितु कौशिक, पूजा, ममता, एआईडीवाईओ के संदीप मेहरा, एसयूसीआई(सी) के लोकल सचिव राजकुमार जांगड़ा, भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के जिला सचिव धर्मवीर सिंह, आदि ने सम्बोधित किया।

ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) और युवा संगठन एआईडीवाईओ नेताओं ने प्रदेश की भाजपा सरकार से मांग की कि गत दिनों रोहतक में सोनीपत की युवती के अपहरण, गैंगरेप व निर्मम हत्या काण्ड में संलिप्त सभी अपराधियों को तत्काल गिरफ्तार किया जाए, उन्हें कठोरतम सजा दी जाए और मृतका के परिवार को सुरक्षा प्रदान की जाए। वक्ताओं ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा सरकार की प्राथमिकता नहीं है। जाहिर है कि मृतका के परिजनों द्वारा चन्द रोज पहले अपराधियों के खिलाफ शिकायत किये जाने पर भी पुलिस ने अपराधियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की और दुष्कर्मियों का दुस्साहस बढ़ने दिया। सरकार के उदासीन रवैये व इसकी कार्यप्रणाली से महिला-विरोधी मानसिकता के लोग व अपराधी प्रवृति वाले असामाजिक तत्व समझ चुके हैं कि 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और 'ऑप्रेशन दुर्गा' जैसे सरकारी नारे मात्र थोथे व बेजान हैं। सरकार प्रचार माध्यमों से अश्लीलता फैला रही है। शराबखोरी-नशाखोरी को बढ़ावा दे रही है। नतीजतन महिलाओं पर भीषण अपराध बढ़े हैं। भाजपा के शासन में आने पर इन पर रोक नहीं लगी है। प्रदेश की महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं।

महिलाओं पर बढ़ते अपराधों पर गहरी चिंता जाहिर करते हुए एआईएमएसएस की नेत्री श्रीमती रितु कौशिक ने कहा कि 9 मई को हरियाणा में सोनीपत की एक लड़की का अपराधियों ने अपहरण कर रोहतक लाकर कार में उससे सामूहिक बलात्कार किया और फिर क्रूरता के साथ उसे मार दिया। यहां तक कि रोहतक काण्ड के दोषियों की गिरफ्तारी से पहले, गत 13 मई शनिवार की रात गुड़गांव में ऐसा ही एक और जघन्य काण्ड हो गया। दिल्ली में रह रही सिक्किम की एक महिला को गली से अगुवा किया गया और कार में बलात्कार कर आधी रात को उसे गली में फेंक दिया गया। गुड़गांव बलात्कार काण्ड में आज तक कोई भी मुजरिम पुलिस द्वारा पकड़ा नहीं गया है। देश में एक पर एक हो रहे ऐसे दिल दहला देने वाले और शर्मसार कर देने वाले काण्ड गहरी चिंता के विषय बन गये हैं। केन्द्र व राज्य सरकार और सत्तासीन पार्टी बीजेपी गो-रक्षा के लिए काफी चिंता दिखा रही है। लेकिन हमारे देश की महिलाओं के जीवन की सुरक्षा और इज्जत-आबरू की रक्षा करने के लिए उसका कोई सरोकार नहीं है। उन्होंने इस मुद्दे पर समाज के सचेत लोगों को आगे आने का पुरजोर आह्वान किया ताकि सरकार पर दबाव कर महिलाओं की इज्जत-आबरू की रक्षा व जीवन की सुरक्षा सुनिष्ठचत की जा सके।

उन्होंने मांग की कि रोहतक, गुड़गांव आदि तमाम बलात्कार काण्डों के दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाये और उनको सख्त से सख्त सजा दी जाये। हमारे देश की महिलाओं की सुरक्षा और रक्षा सुनिश्चित करने के लिए तत्काल ठोस कदम उठाये जायें।

प्रदर्शन में बिमला, पूजा, प्रेम, ममता, कृष्णा, कमलेश, राजेन्द्र, विशाल, फूलसिंह, राजकुमार, जयवीर आदि काफी सारे युवक-युवतियां शामिल थे।

गुना(म.प्र.) : रोहतक में घटित सामूहिक बलात्कार और हत्या पर रोष जताते हुए एमएसएस की जिलाध्यक्ष संगीता आर.बी और विधि श्रीवास्तव के नेतृत्व में यहां रपटा चौराहे पर प्रदर्शन किया गया। ग्वालियर में नाकाचंदरवदनी पर महिलाओं द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। इन घटनाओं की रोकथाम के लिए अश्लीलता व नशाखोरी पर रोक लगाने की मांग की गई। सुनिधि मनस्वी व भूमिका ने बात रखी। देवास में महिलाओं ने बैनर के साथ कलेक्ट्रट पहुंच कर ज्ञापन सौंपा।

अशोकनगर में अम्बेडकर चौराहे पर डीवाईओ, डीएसओ, एमएसएस द्वारा प्रदर्शन किया गया। पुष्पा ने सम्बोधित किया।

तीन साल में हुए दो हजार से ज्यादा साम्प्रदायिक दंगे

बाबरी मस्जिद तोड़ने जैसे बड़े पैमाने के नहीं लेकिन 2014 से 2016–इन तीन सालों में भारत में 2098 साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं। ये विरोधियों के कोई मनगड़न्त आंकड़े नहीं हैं, बल्कि मोदी सरकार के गृहमंत्रालय के आंकड़े हैं। इस साल के शुरूआती दौर में ये आंकड़े संसद में पेश किये गए थे।

2014 के मध्य में नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली थी। उसी साल लाल किले से भाषण में राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा था, ''दंगों पर 10 साल का बैन लगा दें''। सरल विश्वासी कई लोगों ने प्रधानमंत्री की इस बात पर वाहवाही की थी। वे मोदीजी की चालाकी समझ ही नहीं पाये। क्या आम आदमी दंगे कराता है, या निहित स्वार्थी तत्व लोगों को दंगे में फंसा देते हैं? मोदी के प्रधानमंत्री काल में तीन साल में दो हजार से ज्यादा दर्ज दंगों के बहुत सारे मामलों में ही उनका ही उकसावा रहा है, जो 'जय श्रीराम' नारे से आकाश गूंजा देते हैं। गो-हत्या बंद करने के नाम पर लोगों की हत्या करने में जिनका जमीर उन्हें जरा भी नहीं कचौटता है, वे ही इन सब दंगों के सरगना हैं।

किस साल में कितने दंगे हुए हैं? 2014 में 644, 2015 में 751 और 2016 में 703–कुल मिला कर साम्प्रदायिक हिंसा के 2098 मामले दर्ज हुए।

इतने दंगे होने पर प्रशासन ने ऐतिहात के तौर पर क्या कदम उठाये? अगर प्रशासन सख्ती से इनका मुकाबला करता तो दंगेबाजों को गिरफ्तार किया होता, उन्हें सजा दी होती तो इतने दंगे भड़कते ही नहीं।

मोदीजी ने शपथ लेते समय कहा था कि सुशासन कायम करेंगे। सालाना औसतन पौने सात सौ दंगों का रिकार्ड लेकर तीन साल में ही उनके राजमुकुट पर नाकाम शासक का तमगा लग गया है।

(तथ्य सूत्र : द टेलिग्राफ, 12 मई 2017)

दुष्कर्म काण्ड के खिलाफ सिक्किम के छात्रों ने जताया रोष

गंगटोक (सिक्किम) : दिल्ली में रहने वाली सिक्किम की एक 22 वर्षीय युवती से 14 मई को हरियाणा के गुड़गांव में हुए बलात्कार के खिलाफ सिक्किम राज्य की राजधानी गंगटोक में एआईडीएसओ राज्य सांगठनिक कमेटी के बैनर तले छात्रों ने रोष जताया। छात्रों ने बलात्कारियों को तुरन्त गिरफ्तार करके उन्हें उदाहरणमूलक सजा देने और दिल्ली या इससे सटे प्रदेशों में रहने वाली नार्थ ईस्ट की लड़कियों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। सिक्किम विश्वविद्यालय और टैडोग सरकारी कॉलेज में इसके खिलाफ हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया जिसमें 1200 से भी अधिक छात्रों ने हस्ताक्षर अभियान किए। एम.जी. मार्ग पर हुई सभा को कॉ. शंकर शर्मा ने सम्बोधित किया। एआईडीएसओ के राज्य कोषाध्यक्ष कॉ. भानूभक्त शर्मा ने ज्ञापन पढ़ कर सुनाया। काफी सारे स्थानीय लोगों ने भी विरोध प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया। छात्रों ने राज्यपाल को जन

गंगटोक : रोष व्यक्त करते हुए सिक्किम के छात्र-छात्राएं

हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन को सौंपा जिसकी प्रति मुख्यमंत्री के नाम भेजी और अल्टिमेटम दिया कि अगर एक हफ्ते के अन्दर उचित कार्यवाही नहीं की गई तो और भी बड़े स्तर पर आन्दोलन को उठाया जाएगा।

दुष्कर्मियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने की उठाई मांग

अहमदाबाद (गुजरात) : उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में गेंगरेप की घिनौनी घटना के खिलाफ ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) ने अवाग, मजूर महाजन संघ की महिला शाखा और ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेण्ट्स ऑर्गेनाइजेशन व अन्य संगठनों के साथ मिल कर अहमदाबाद में एक विरोध प्रदर्शन आयोजित किया।

इन संगठनों ने बुलंदशहर के पीड़ितों को इन्साफ देने और दुष्कर्मियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने की मांग की।

अहमदाबाद: बुलंदशहर के पीड़ित परिवार को न्याय देने की मांग करते हुए युवक-युवतियां

कैज्यूअल कर्मचारियों को नियमित करने की मांग पर दिल्ली में बैंक कर्मियों का धरना

नई दिल्ली : ऑल इण्डिया बैंक एम्पलाइज यूनिटी फोरम के आह्वान पर बैंक के कैज्यूअल वर्करों यानी कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने, खाली पड़े पद भरने, एनपीए के कारण क्षतिग्रस्त बैंक कर्मचारियों पर किसी तरह का हमला करने से बाज आने, समान काम का समान वेतन लागू करने, पार्ट टाइम कर्मचारियों को फुल टाइम करने, न्यूनतम वेतन बढ़ाने आदि की मांगों पर पांच सौ से अधिक बैंक कर्मचारियों ने 15 मई को दिल्ली में जंतर मंतर पर धरना-रोष प्रदर्शन में शिरकत की। वहां से 5 सदस्यीय एक प्रतिनिधिमण्डल ने वित्त मंत्री के दफ्तर में मांगों का ज्ञापन सौंपा।

धरना मंच से एआईयूटीयूसी दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉमरेड हरीश त्यागी, एआईयूटीयूसी मध्य प्रदेश राज्य सचिव कॉमरेड सुनील गोपाल, ऑल इण्डिया बैंक एम्पलाइज यूनिटी फोरम पश्चिम बंगाल के महासचिव कॉमरेड जगन्नाथ

दिल्ली : जंतर मंतर पर रोष प्रकट करते हुए बैंक कर्मचारी

राय मण्डल, कॉमरेड गौरीशंकर दास, आईडीबीआईओए (एआईबीओसी) के महासचिव स्वामी एलानजलियान, संयोजक संगठन के अध्यक्ष कॉमरेड अरूप रतन साहा सहित कई नेताओं ने धरने पर बैठे बैंक कर्मचारियों को सम्बोधित किया।

महान नवम्बर क्रान्ति के सौ साल

(गतांक से आगे)

दूसरा विश्व युद्ध

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अवश्यम्भावी परिणाम के तौर पर मन्दी, महामन्दी आयेगी ही, उसका समाधान पूँजीवादी व्यवस्था में असम्भव है। इसलिए पहले विश्वयुद्ध के बाद फिर महामन्दी आई और बाजार के नये सिरे से बंटवारे की खुंखार लड़ाई छिड़ने के आसार हो गए।

जर्मनी में फासीवाद के अभ्युत्थान के बाद यह साफ जाहिर होता जा रहा था कि दुनिया धीरे-धीरे एक विश्वयुद्ध की तरफ सरकती जा रही है। पाश्चात्य साम्राज्यवादी ताकतें जर्मन फासिस्टों को समाजवादी सोवियत यूनियन के खिलाफ उकसाने की कोशिश कर रही थी। स्तालिन के नेतृत्व में सोवियत समाजवाद इस आने वाली खतरनाक मुसीबत से अपनी रक्षा करने के लिए हर पहलू से तैयार करने की जी-जान से कोशिश कर रहा था। इसी बीच 1939 में दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। इसके बाद रूस की तरफ से युद्ध टालने की लगातार कोशिशों के बावजूद जर्मनी अनाक्रमण संधि तोड़कर आखिरकार 21 जून 1941 को सोवियत यूनियन पर टूट पड़ा। हमले के शुरूआती दौर में जर्मन फौज ने भारी सफलता हासिल कर ली थी। उसने सोवियत यूनियन के एक बहुत बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था। लगभग सभी पश्चिमी साम्राज्यवादी हलके इस बात पर यकीन करने लगे थे कि हिटलर की यान्त्रिक फौज के आगे लाल फौज के परखचे उड़ जायेंगे। किसी ने पंद्रह दिन सीमा बांध दी थी, किसी ने एक महीना। युद्ध के शुरूआती दौर की घटनाओं ने उनके कथन को सही साबित किया था। इस दौर की विशेषता थी जर्मन फौज का आगे बढ़ते जाना, नित्य नये-नये इलाकों पर कब्जा करते जाना और लाल फौज का पीछे हटते जाना। लेकिन स्तालिन के नेतृत्व में सोवियत की बहादुर जनता के मन में अलग सोच थी। उनके इस विश्वास में कोई कमी नहीं आयी थी कि फासिस्टों की यह जीत सामयिक थी, क्षणिक थी, सोवियत लाल फौज और बहादुर जनता उन्हें पराजित करेगी ही। युद्ध शुरू होने के 12 दिन बाद 3 जुलाई, 1941 को कॉमरेड स्तालिन ने कौम के नाम पहला रेडियो भाषण दिया था।

जाने-माने रूसी लेखक कोन्स्तान्तिन सिमोनोव ने अपने उपन्यास 'दि लिविंग एण्ड दि डेड' में इस भाषण को चिरस्मरणीय बना दिया है। उन्होंने दिखाया कि किस तरह इस भाषण ने रूस में नवजीवन संचार किया था। सिमोनोव ने लिखा था, "स्तालिन की आवाज धीमी, नीची और नरम थी, उनके अन्दाजे बयां में जार्जियाई उच्चारण का बोलबाला था। ...चाहे उनका अत्यंत थका हुआ नि:श्वास ... महसूस हो, या नहीं भी हो, पर उनकी आवाज मंदी, स्थिर-संयत और बिल्कुल शान्त लगती ही थी। ...उनसे अलग-अलग तरह से प्यार किया जाता था : कोई अपने मन में कुछ बातें रखते हुए उनसे तहेदिल से आदर करता था, उनकी प्रशंसा करते हुए लेकिन साथ ही डरते हुए. ..लेकिन कोई भी उनके साहस और फौलादी इच्छा शक्ति के बारे में जरा भी संदेह नहीं पालता था।"(दि लीविंग एण्ड दि डेड, पृ. 708)

इस भाषण में कॉमरेड स्तालिन ने युद्ध की वर्तमान अवस्था, फासीवादी फौज का अग्रसर होना, लाल फौज का पीछे हटना, जर्मनी के साथ अनाक्रमण संधि के औचित्य, सोवियत जनता को गुलामी की जंजीरों में जकड़ने के फासीवादी मन्सूबे आदि का जिक्र किया था। इसके बाद वर्तमान युद्ध की प्रकृति और क्यों लाल फौज की जीत निश्चित है इस बारे में स्तालिन ने कहा था, "फासिस्ट जर्मनी के साथ इस युद्ध को एक साधारण युद्ध नहीं माना जा सकता। यह युद्ध सिर्फ दो फौजों के बीच युद्ध नहीं है। यह जर्मन फासिस्ट फौज के खिलाफ समग्र सोवियत जनता का युद्ध है। फासिस्ट उत्पीड़कों के खिलाफ हमारे देश की रक्षा के लिए इस राष्ट्रीय देशभक्तिपूर्ण युद्ध का लक्ष्य केवल हमारे देश पर मंडराते खतरे का निराकरण करना ही नहीं है, बल्कि जर्मन फासीवादी शिकंजे में जकड़ी हुई समस्त यूरोपीय जनता की मदद करना भी हमारा लक्ष्य है। इस मुक्ति युद्ध में हम अकेले नहीं हैं। ...हमारे देश की स्वाधीनता की रक्षा करने का यह युद्ध, यूरोप और अमेरिका के लोगों के स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, लोकतांत्रिक स्वातंत्र्य के लिए संघर्ष के साथ घुलमिल कर एक हो जाएगा।"...

"कॉमरेड्स, हमारी शक्तियाँ असीम है। इस सत्य को घमण्ड के नशे में चूर दुश्मन काफी कीमत चुका कर जल्द ही समझ जायेगा। हमलावर दुश्मन के खिलाफ लड़ाई में लाल फौज का साथ देने के लिए हजारों हजार मजदूर, सामूहिक खेतों के किसान और बुद्धिजीवी आगे आ रहे हैं। हमारे देश की करोड़ों करोड़ जनता भी उठ खड़ी होगी। ...अपने देश, अपनी इज्जत, अपनी आजादी की रक्षा करने के लिए जनता को जान की बाजी लगाकर जर्मन फासीवाद के खिलाफ इस देशभक्तिपूर्ण युद्ध में कूद पड़ना होगा।''

पन्द्रह दिनों में भयावह फासीवादी हमले के खिलाफ उठ खड़े होकर जान न्यौछावर करते हुए सोवियत जनता ने कॉमरेड स्तालिन के इस आह्वान का उपयुक्त मूल्य दिया था। लेनिनग्राद की घेराबंदी के समय सोवियत जनता के वीरतापूर्ण संग्राम का जो विवरण विश्व के जाने-माने इतिहासकार अलेक्जेण्डर वेर्थ ने दिया है, वह विस्मयकारी है। उन्होंने लिखा था कि खाद्य साम्रगी के भयंकर अभाव के बावजूद लेनिनग्राद का कोई खाद्य भण्डार, कभी लूटा नहीं गया। लाजिमी तौर पर मौत के मुँह में जा खड़े होने पर भी वे आत्म-बलिदान और देशप्रेम की जबरदस्त मिसाल कायम कर गये थे। उन्होंने ओल्गा बेरघोल्ज नामक एक लड़की की दास्ताँ का जिक्र किया था। भूख की मार से बिलबिलाती हुई इस लड़की का सम्बल था एक टुकड़ा रोटी और एक सिगरेट। वह अपने पिता को यह सिगरेट देने के लिए नेवा नदी की जमी हुई बर्फ और आसमान से हो रही बर्फबारी को पार करते हुए अपने पिता के पास पहुँची थी। रास्ते में असंख्य लोगों की लाशें पड़ी थी। मौत मानो आम बात हो गयी थी। स्वदेश रक्षा के लिए सोवियत जनता का संघर्ष महाकाव्य की गाथा के विषय में तब्दील हो गया था।

सोवियत यूनियन के इस महान संघर्ष में जर्मनों के द्वारा कब्जाये गये इलाकों में या जर्मन लाइन के पीछे जनता द्वारा जहाँ छापेमार गुरिल्ला युद्ध की सृष्टि हुई थी, जिससे युद्ध सही मायने में जनयुद्ध में तब्दील हो गया था, वहीं लेखकों, साहित्यकारों, कलाकारों, कवियों व बुद्धिजीवियों ने भी इस मुक्तियुद्ध में गौरवशाली भूमिका निभायी थी। उसी समय प्रसिद्ध रूसी कवि मायोकोवस्की ने लिखा था, "मैं चाहता हूँ कलम संगीन की पर्यायवाची हो उठे।"

एक हजार से ज्यादा सोवियत लेखक फौज में शामिल हुए थे, जिनमें 275 शहीद हुए थे। लाल फौज की बहादुरी की गाथाओं, रूसी महिलाओं और बच्चों के असीम आत्म-बलिदान के विवरणों, कॉम्सोमोल सदस्यों की कुर्बानियों, पार्टीजन योद्धाओं के गौरवमय संघर्षों ने तब रूसी साहित्य को काफी समृद्ध किया था। रूस ने तब केवल सामरिक क्षेत्र में ही संघर्ष नहीं किया था, बल्कि साथ ही साथ मानव की मानसिकता को उन्नत करने का काम भी अत्यन्त महत्व देकर जारी रखा था। युद्धकालीन उन्हीं वर्षों में सोवियत यूनियन में 16 करोड़ 95 लाख कहानियाँ छपी थी।

इस महान संघर्ष में योग्य नेता की भूमिका कॉमरेड स्तालिन ने निभायी थी। आइजेक ड्यूट्शर ने लिखा था, "वे (स्तालिन) ही फौज के असल सेनापति थे। आम राजनीतिज्ञों की तरह युद्ध की वास्तविकता से बेमेल अमूर्त रणकौशलगत फैसले लेने तक सीमित वे हरगिज नहीं थे। जिस तरह की उत्सुकता भरी गहरी लगन के साथ आधुनिक युद्ध विद्या के तकनीकी पहलुओं का बारीक से बारीक तफसील में वे अध्ययन किया करते थे उससे इस मामले में ध्यान केन्द्रित न करके खिलवाड़ करने वाला कम गहरे ज्ञान का अधिकारी तो उन्हें हरगिज नहीं कहा जा सकता था।" (स्तालिन पृ. 469-70)

युद्ध के दिनों में कॉमरेड स्तालिन की काम में व्यस्तता का उल्लेख करते हुए उन्होंने यह भी लिखा था, "युद्ध के दौरान मित्र-पक्ष के जिन सब मेहमान आगंतुकों को क्रेमलिन में बुलाया जाता था, वे यह देखकर आश्चर्यचकित

रह जाते थे कि कूटनीतिज्ञ, सामरिक, राजनैतिक आदि बहुत सारे छोटे-बड़े मुद्दों पर स्तालिन व्यक्तिगत रूप से अन्तिम फैसला लिया करते थे। दरअसल वे ही अपने स्वयं के कमाण्डर-इन-चीफ थे, अपने स्वयं के रक्षामंत्री थे, अपने स्वयं के क्वाटर मास्टर थे, अपने स्वयं के आपूर्ति मंत्री थे, अपने स्वयं के विदेश मंत्री थे, और यहाँ तक कि राष्ट्रीय अदब-कायदे के भार प्राप्त प्रधान (शेफ डी प्रोटोकोल) भी वे खुद ही थे।...वे जंगे-मैदान की मुहीमों की निगरानी किया करते थे और हिदायतें दिया करते थे। अपने दफ्तर के डेस्क से उन्होंने एक और शानदार जिम्मेदारी सम्भाली थी। वह थी, यूक्रेन और पश्चिम रूस से 1360 प्लांटों और कारखानों को हटाकर वोल्गा, उराल और साइबेरिया में स्थानान्तरित करना। इसमें न केवल मशीनरी और संयंत्रों को हटाकर वहाँ ले जाना शामिल था, बल्कि इसके साथ ही लाखों मजदूरों एवं उनके परिवारों को भी हटा कर वहाँ ले जाना शामिल था। एक काम से दूसरे कामों के बीच में उन्हें यूं कहें, (ब्रिटिश राजनेता) बीवर ब्रुक और हरमैन आदि से इस बारे में भी मोलतोल करना पड़ता था कि उनके पश्चिमी मित्र देश किस मात्रा में एल्यूमिनियम या कितनी क्षमता वाली कितनी मात्रा में बन्दूकें और कितनी विमानभेदक तोपें रूस को सुपुर्द करेंगे।...दिन भर मिलिट्री रिपोर्टों, फौजी मुहीमों के फैसलों, आर्थिक निर्देशों, कूटनीतिक मोलभावों के बाद सुबह-सवेरे वे जंगे-मैदान से आने वाली ताजातरीन खबरें या जनता का नैतिक बल कैसा है इस बारे में मिलने वाली एनकेवीडी या गृह मंत्रालय की किसी गोपनीय रिपोर्ट के अध्ययन में डूब जाते थे।

उनके – सतर्कता, एकाग्रता, धैर्य-सहनशीलता की विस्मयकारी प्रतिभा से सम्पन्न, लगभग सर्वज्ञ, लगभग सर्वव्यापी एक व्यक्तित्व के दिन-पर-दिन इसी तरह गुजरे थे लड़ाई के चार साल।" (स्तालिन, पृ. 456-57)

कॉमरेड स्तालिन के इस योग्य नेतृत्व के फलस्वरूप शुरूआती हार के धक्कों से सम्भलने पर युद्ध में मोड़ आने लगा। आखिरकार स्तालिनग्राद की लड़ाई ने ही युद्ध में पूरा मोड़ ला दिया और जर्मन फौज पीछे हटते-हटते अपने कब्जे में लिए गये देशों से भागने लगी। आखिरकार 9 मई 1945 को लाल फौज के हाथों बर्लिन का पतन हुआ। फासीवाद की सैनिक शक्ति को परास्त करके सोवियत समाजवाद ने मानव सभ्यता की रक्षा की।

इस लड़ाई में जनता ने युद्ध की बड़ी भारी कीमत चुकायी थी। इस युद्ध में रूस के दो करोड़ लोग मारे गये थे। 1710 शहर तबाह हो गये थे, 70 हजार से ज्यादा गाँव उजड़ गये थे, 2 करोड़ 50 लाख लोग बेघर हो गये थे, 31850 कल-कारखाने ध्वस्त हो गये थे, 65000 किलोमीटर रेल लाइन टूट गयी थी और 4100 रेलवे स्टेशन, 98000 सामूहिक फार्म, 1876 राजकीय फार्म, 2891 मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन धराशाही हो गये थे। 70 लाख घोड़ों और कई करोड़ पालतू पशुओं को जर्मनी हांक ले जाया गया था। बहुत बड़ी संख्या में बेहद काबिल नेता-कार्यकर्ता मारे गये थे। महान स्तालिन पर चार वर्ष से एक विरामहीन तूफान चल रहा था। वे शरीरिक तौर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

महान नवम्बर क्रान्ति ...

(पृष्ठ 3 का शेष)

पर थक कर चूर हो गये थे। लेकिन मनोबल से आदर्शनिष्ठ यह महान नेता अडिग रहा।

लगभग समग्र यूरोप की उत्पादक शक्ति को हिटलर के नेतृत्वाधीन धुरी शक्तियों ने हथिया लिया था। यह सारी ताकत लेकर हिटलर ने समाजवादी सोवियत यूनियन पर धावा बोल दिया था। इस प्रबल शक्ति को भी समाजवादी सोवियत यूनियन के हाथों आखिरकार परास्त होना पड़ा था। इस जीत के मामले में सोवियत यूनियन की आर्थिक, राजनैतिक, सामरिक शक्ति की भूमिका वाकई बहुत बड़ी थी। लेकिन इस जीत के सवाल पर एक और चीज की भी भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण थी। वह थी उसकी विचारधारा, उसकी वैज्ञानिक समाजवाद की सोच। इस सोच से सोवियत समाजवाद समस्त नागरिकों को प्रेरित कर पाया। उनके सामने नये और बेहतर जीवन का सपना पेश कर पाया। नयी सभ्यता के सृजन के मामले में सोवियत विचारधारा के चरित्र की व्याख्या करते हुए सिडनी वेब और बीट्रिस वेब ने लिखा था, "सोवियत कम्युनिज्म की एक नई विचारधारा है और साथ ही एक नया अर्थशास्त्र भी। सोवियत कम्युनिज्म व्यक्ति के ज्ञान के विकास की कोई सीमा नहीं रखता है। यह हर क्षेत्र में विज्ञान की विशाल और अथाह प्रगति की सोचता है। ...यह सामाजिक जीवन के बारे में अपने खुद के तजुर्बे के आधार पर एक नई सभ्यता की नीति-नैतिकता रच रहा है।... हर किसी के जीवन का प्रमुख लक्ष्य-उद्देश्य आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि अब और हमेशा के लिए मानवजाति का कल्याण है।...अगर कोई अपनी योग्यता के हिसाब से, उसके हिस्से में जितना काम आता है, उससे कम काम करता है और उत्पादित धन-दौलत का पूरा हिस्सा समाज से लेता है—तो वह एक चोर है। ...दूसरी तरफ जो अपने जिम्मे से ज्यादा काम करता है—जो काम समाज के लिए उपयोगी है, वह कोई खोज या आविष्कार करता है, वह आर्ट एण्ड क्राफ्ट के क्षेत्र में दूसरों की तुलना में कोई अच्छा काम करता है, वह उत्पादन व प्रशासन में अपने आपको काबिल व समर्पित नेता साबित करता है, उसे अपने चुने हुए कॅरियर में लगे रहने के लिए न केवल आर्थिक या अन्य सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, बल्कि वीर कह कर सम्मानित भी किया जाता है।...हर कोई कारखानों व खेतों में उसी मूल्यबोध को लेकर काम करता है, उसी मूल्यबोध को लेकर परिवार में जीवन बिताता है, उसी मूल्यबोध को लेकर खेल-कूद में भाग लेता है या चुनावों में मतदान में हिस्सा लेता है। धर्मनिरपेक्ष और धर्मपरायण सबका हक एक जैसा है। एकमात्र वही सुन्दर जीवन उन सब का लक्ष्य है, जो जीवन उसके संगी-साथियों, जनता के लिए सुन्दर है, कल्याणकर है। इसमें नर-नारी के बीच भेदभाव नहीं है, धर्म-वर्ण-जाति का भेदभाव नहीं है।" (सोवियत कम्युनिज्म ए न्यू सिविलाइजेशन, पृ. 973) इस नैतिक मूल्यबोध के आधार पर ही सोवियत समाजवादी जीवन की रचना हुई थी। इसी लिए वह अजेय था।

जिस समाजवादी नैतिकता को रूस की जनता के दिल-दिमाग में कूट-कूट कर भर दिया गया था उसके बल पर सोवियत यूनियन दुर्दान्त नाजी फौज को हरा पाया था, दुनिया के तमाम महान मनीषियों ने उसकी जय-जयकार की थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था, "रूस में आया हूँ—न आता तो इस जन्म की तीर्थयात्रा बिलकुल अधूरी रह जाती। यहाँ इन लोगों ने जैसा काम किया है, उस पर भले-बुरे का विचार करने से पहले ही मुँह से निकल पड़ता है—कैसा असम्भव साहस है।...पश्चिम महादेश विज्ञान के बूते पर दु:साध्य को साध्य कर दिखाता है, देखकर मन तारीफ कर उठता है; लेकिन यहाँ जो विशाल कार्य चल रहा है, उसे देखकर मैं सबसे ज्यादा विस्मित हुआ हूँ। ...मगर यहाँ देखता हूँ कि बहुदूरव्यापी एक खेत बनाकर ये एक नई ही दुनिया बनाने के लिए कमर कस कर जुटे हुए हैं। देर सही नहीं जाती, क्योंकि दुनियाभर में इन्हें प्रतिकूलता ही प्रतिकूलता दिखाई दे रही है, सभी इनके विरोधी हैं—जितनी जल्दी हो सके, इन्हें अपने पैरों पर खड़े होना ही होगा—हाथों-हाथ साबित कर देना होगा कि ये जो कुछ चाहते हैं, वह इनकी भूल नहीं है, हवाई बात नहीं है। 'हजार वर्ष' के खिलाफ 'दस-पंद्रह वर्षों' को लड़कर जीतना ही है —प्रतिज्ञा जो की है। दूसरे देशों की तुलना में इनका आर्थिक बल बहुत ही थोड़ा है, हाँ, प्रतिज्ञा का जोर दुर्धर्ष है। (रूस की चिट्‌टी 3, 25 सितम्बर 1930)

प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षाविद् और दार्शनिक जॉन डिवेई ने लिखा था, "क्रान्ति द्वारा जारी शक्ति और उत्साह का अभिप्राय बड़ा गहरा था। ...जो देख रहा हूँ उसके लिए मैं तैयार नहीं था। ...यह सब देख-सुनकर क्या सामग्रिक तौर पर सोवियत रूस के लक्ष्य-उद्देश्य के बारे में मेरी धारणा बना सकता था? मुक्त कण्ठ से मैं कहना चाहता हूँ कि यह लक्ष्य-उद्देश्य था सबसे बड़ा और आकर्षक।. ..सोवियत नेताओं की केन्द्रीय समस्या है एक नई मानसिकता, एक नई "विचारधारा" तैयार करना। यह माना जाता है कि मूलत: यह आर्थिक कारण से उत्पन्न प्रभाव होने के बावजूद, समय आने पर एक द्वितीय कारण बन जाती है जो "विपरीत क्रम में" अर्थव्यवस्था पर भी क्रिया करती है। इसलिए कम्युनिस्ट के नजरिये से सामूहिक आर्थिक संस्थाओं के द्वारा पूँजीवादी आर्थिक संस्थाओं को प्रतिस्थापित करना ही काफी नहीं होता है। इसके साथ ही साथ बुर्जुआ समाज से मिली व्यक्तिवादी मनोवृति को सामूहिक मानसिकता के द्वारा प्रतिस्थापित करना भी जरूरी होता है।... मुझे जो तजुर्बे हुए हैं उनसे मुझे पक्का यकीन हो गया है कि एक नई सामूहिक मानसिकता निर्मित करने के लिए असाधारण रचनात्मक प्रयास किया जा रहा है। इस सामूहिक मानसिकता को मैं नई नैतिकता कहना चाहता हूँ।...रूस में जो कुछ हो रहा है उसका फाइनल महत्व केवल राजनैतिक या आर्थिक भाषा में ही नहीं समझा जा सकता। जिस विशाल परिवर्तन में से वह गुजर रहा है, बेहिसाब अहमियत वाले इस परिवर्तन में, मनुष्य के मानसिक और नैतिक मिजाज में, एक शैक्षणिक रूपांतरण में इसे समझा जा सकता है।...इसने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी है।"(इम्प्रेशन्स ऑफ सोवियत रशिया, पृ 51-52)

महान मानवतावादी रोमाँ रोलाँ ने लिखा था, "सोवियत यूनियन में आज जो रचनात्मक आन्दोलन चल रहा है, वह क्या समाज को एक ऐसे भविष्य की तरफ नहीं ले जा रहा है, जहाँ केवलमात्र सुविचार और सृजन शक्ति का पूरा विकास सम्भव है। मुझे लगता है, सोवियत साधना की गति इसी दिशा में है। ...उनके सामने जो काम है, वह काम अतिमानवों का काम है। अतीत के कूड़े-कचरे के अम्बार को उन्हें पहले ही झाड़-बुहार देना पड़ा है। ...इस कूड़े-कचरे के तन-बदन पर आप चाहे कितना ही सुगन्धित द्रव्य, इत्र मलें, इसकी सड़ांध-बदबू से आप बच नहीं सकेंगे।

...लेनिन और स्तालिन सरीखे इन्सान पुराने और माहिर माली की तरह हैं। मिट्‌टी को वे पहचानते हैं, पूरी जिन्दगी भर वे इस मिट्‌टी को लेकर काम करते आये हैं, उनके करीब जाने से ही हम काफी कुछ सीख सकते हैं।" (शिल्पीर नवजन्म, बंगाली भाषा में, पृ. 279-280)

दुनिया के तमाम महान मानवतावादियों ने इस तरह सोवियत समाजवाद के नयी सभ्यता के सृजन के प्रयास का अभिनन्दन किया था। उन्होंने समझ लिया था कि उनके दिलों में जो स्वप्न संजोया हुआ था, जो कल्पना की गई थी, उसने मानो समाजवादी सोवियत रूस में जीवन्त रूप धारण कर लिया है।

पूँजीवादी दुनिया जिन सब समस्याओं के समाधान की कल्पना भी नहीं कर सकती थी, सोवियत समाजवाद ने सतत संघर्ष के जरिये उनका समाधान कर लिया था। क्रान्ति के 15 सालों में ही सोवियत यूनियन में वेश्यावृत्ति का अस्तित्व नहीं बचा था। यौन रोगों या नशाखोरी की समस्या भी नहीं रही थी। सोवियत समाजवाद लाखों-लाख अनाथ, असहाय बच्चों का स्वस्थ जीवन में पुनर्वास कर सका था। विकलांगों को दया की नजरों से देखने की बजाय उनकी योग्यता के अनुसार काम में लगा कर उन्हें एक पूर्णांग मनुष्य में परिवर्तित करने की पहल की थी। सोवियत समाजवाद ने ऐलान किया था कि जो काम नहीं करेगा, वह खा भी नहीं पायेगा। रोजगार देने की जिम्मेदारी राज्य की थी। सभी योग्यतानुसार काम मिलेगा, काम के अनुसार वेतन मिलेगा। फिर इस योग्यता को लगातार बढ़ाने का भी बेरोकटोक मौका था। जबकि पंगू, विकलांग, अस्वस्थ, गम्भीर रूप से बीमार लोगों को स्वस्थ करने की जिम्मेदारी राष्ट्र की थी। बच्चों और बूढ़ों को किसी की दया पर आश्रित रहकर गुजर-बसर नहीं करनी पड़े, उसकी व्यवस्था भी बहुत लम्बी-चौड़ी की गई थी। समाज के सभी कामों में नर-नारियों के समान अधिकार थे। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था, जिसमें सोवियत समाजवाद ने नारियों के बेरोकटोक विकास का रास्ता नहीं खोल दिया हो। अनपढ़ता के अभिशाप से भी सोवियत जनजीवन पूरी तरह मुक्त हो गया था। जो रूस यूरोप में सबसे पिछड़ा हुआ देश था, प्रथम पंचवर्षीय योजना के बाद ही उसने उद्योगीकरण के मापदण्ड से दुनिया में दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया था। छोटे पैमाने की कृषि अर्थव्यवस्था से मुक्त होकर सोवियत यूनियन ने राजकीय और सामूहिक फार्मों को जन्म दिया था। इस तरह की कृषि व्यवस्था दुनिया में कभी नहीं देखी गयी थी। करोड़ों करोड़ किसान शोषण से मुक्त होकर नये और उन्नत जीवन के अधिकारी हुए थे। कहीं भी इस परिवर्तन की तुलना मिलनी मुश्किल थी। सोवियत समाजवाद मानता था कि जीवन के समस्त क्षेत्रों में ही वैज्ञानिक चिन्तन अपनाये बिना मनुष्य पूर्ण मनुष्य नहीं बन सकेंगे। इसीलिए मनुष्य की मानसिकता को अध्यात्मवादी- कुसंस्कार-ग्रस्त चिंतन से मुक्त करने के लिए बहुत ही महान संघर्ष चलाना पड़ा था। सोवियत समाजवाद में उत्पादन के साधनों के मालिक थे मेहनतकश लोग। सम्पत्ति पर सामूहिक मालिकाना चालू हो गया था। इसके साथ संगति रखते हुए सामूहिक जीवन की धारणा निर्मित करने के लिए मनुष्यों के नैतिक जगत में, रूचि-संस्कृति के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की कोशिश की गई थी। विज्ञान, कला-साहित्य-संगीत-सिनेमा का व्यापक विकास हुआ था। समाजवादी यथार्थ की चर्चा व साधना हुई थी। संक्षेप में, जीवन के हर पहलू को समेटे हुए सोवियत समाजवाद ने नयी सभ्यता के निर्माण की पहल की थी। मानव इतिहास में यह पहल बेमिसाल थी, यहाँ तक कि अकल्पनीय थी। मुक्तिकामी मनुष्य इसीलिए इसका स्वागत किये बिना नहीं रह पाये थे, खुद-ब-खुद ग्रहण किये बिना नहीं रह पाये थे।

सोवियत समाजवाद के इस व्यापक विकास और खासकर दूसरे विश्वयुद्ध की अभूतपूर्व विजय के फलस्वरूप दुनिया भर में औपनिवेशिक देशों की जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी आजादी आन्दोलन की लहर चल पड़ी थी। इस संघर्ष में कहीं कम्युनिस्ट नेतृत्व दे रहे थे (चीन-वियतनाम-कोरिया), तो कहीं राष्ट्रवादी शक्तियाँ इस संघर्ष को नेतृत्व दे रही थी। इसके फलस्वरूप कहीं-कहीं मजदूर वर्ग के नेतृत्व में जन गणतांत्रिक राष्ट्र कायम हुए थे, या फिर कहीं नव स्वाधीन राष्ट्रीय बुर्जुआ राष्ट्र कायम हुए थे। साम्राज्यवादी शक्तियाँ कमजोर पड़ने लगी थी। समाजवादी विश्व खेमे का आविर्भाव हुआ था।

इस विश्व परिस्थिति का मूल्यांकन करते हुए महान मार्क्सवादी चिंतनकार और दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था, "समाजवादी खेमे की लगातार बढ़ती शक्ति और उसके साथ विश्व समाजवादी बाजार के अस्तित्व और विकास, उपनिवेशों और अर्ध उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की बढ़ती लहर, पूर्ववर्ती उपनिवेशों में परंपरागत बाजार का क्षय, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के रंगमंच पर पूर्ववर्ती उपनिवेशों के बुर्जुआ वर्ग का नये प्रतियोगियों के रूप में आविर्भाव—इन सब कारणों ने एक साथ मिलकर विश्व साम्राज्यवादी-पूँजीवादी व्यवस्था के अंदर विभिन्न तरह के द्वन्द्वों को जबरदस्त तेज कर दिया है और इस तरह साम्राज्यवादी औपनिवेशिक व्यवस्था के पूर्ण विघटन की प्रक्रिया को त्वरित कर दिया है।" (चुनिन्दा रचनाएं, प्रथम खण्ड, हिन्दी पृ. 42, युद्ध और शांति, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व)। इसके फलस्वरूप दुनिया विश्व क्रान्ति की दहलीज पर पहुँच गयी थी।

रूस में संशोधनवादियों के खिलाफ कॉमरेड स्तालिन का संघर्ष

सोवियत समाजवाद की तरक्की हैरतअंगेज थी—इसमें कोई संदेह नहीं है। सोवियत समाजवाद ने हिटलरी फासीवाद

(शेष पृष्ठ 6 पर)

लोगों की ज्वलंत मांगों को लेकर रोष प्रदर्शन

लालगंज(बिहार) : बिजली दर बढ़ोतरी वापस लेने, महंगाई रोकने, सबको रोजगार देने, भ्रष्टाचार पर रोक लगाने, सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि लाभुकों के खातों में अविलंब भेजने, मनरेगा कार्यों में जेसीबी व ट्रैक्टर का उपयोग बंद करने, चोरी-राहजनी-हत्या-लूट आदि घटनाओं की रोकथाम करने, किसानों के कर्जे माफ करने आदि मांगों को लेकर गत दिनों एसयूसीआई(सी) अंचल कमेटी लालगंज द्वारा प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय लालगंज पर रोषपूर्ण जन प्रदर्शन किया। स्थानीय गंडक प्रोजेक्ट मैदान से सैकड़ों की संख्या में झण्डे-बैनरों व मांग पट्टिकाओं से लैस कार्यकर्ताओं ने अंचल सचिव कॉ. राजेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में जुलूस निकाला जो तीनपुलवा चौक, गांधी चौक, पोस्ट ऑफिस चौक होते हुए प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय पर पहुंचा। अंत में 32 सूत्री मांगों का एक ज्ञापन प्रखण्ड सह अंचल पदाधिकारी, लालगंज को सौंपा गया।

स्कूल अपग्रेड करने की मांग पर छात्राओं के आन्दोलन को दिया समर्थन

रिवाड़ी (हरियाणा) : गोठरा ठप्पा डहीना की छात्राओं द्वारा स्कूल अपग्रेड करने की मांग को लेकर जारी अनशन धरने को 15 मई को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉ. राजेन्द्र सिंह ने पूरा समर्थन दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल अपग्रेड करने की छात्राओं की मांग बिल्कुल वाजिब है। छात्राओं को इसके लिए इतनी गर्मी में धरने पर बैठना पड़ रहा है यह सरकार के लिए शर्म से डूब मरने की बात है। एआईकेकेएमएस के नेता कॉ. रामकुमार भी धरने पर उपस्थित थे।

बाद में छात्राओं के इस आन्दोलन की जीत हुई। प्रदेश के कई स्कूलों को अपग्रेड करने की शिक्षा मंत्री द्वारा घोषणा की गई।

डहीना : छात्राओं के धरने को सम्बोधित करते हुए कॉ. राजेन्द्र सिंह

मई दिवस मनाया

मुजफ्फरपुर- मुजफ्फपुर जिला कार्यालय में मई दिवस के मौके पर चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा का संचालन एआईयूटीयूसी की केन्द्रीय कमिटी के कार्यकारिणी सदस्य कॉ० बिमल कुमार जाना ने किया। उसके बाद केन्द्रीय श्रमिक संगठनों की संयुक्त रैली निकाली गयी। इसे एआईयूटीयूसी के मुजफ्फरपुर जिला सचिव कॉ० मो० इदरीस, बिहार राज्य मध्याह्न भोजनकर्मी यूनियन के महासचिव कॉ० नरेश राम, कॉ० काशीनाथ सहनी ने संबोधित किया।

मुंगेर- मई दिवस के मौके पर मुंगेर शहर में व जमालपुर में संयुक्त रैली व सभा की गयी। वहीं धरहारा प्रखंड में एआईयूटीयूसी से संबद्ध भवन निर्माण मजदूर यूनियन की ओर से सभा का आयोजन किया गया।

खगड़िया- मशीन चालित ठेला चालक यूनियन की ओर से सैकड़ों मजदूरों की सभा हुई। सभा को एआईयूटीयूसी के बिहार राज्य सचिव कॉ० प्रमोद कुमार ने संबोधित किया।

झाझा- जमुई जिला के झाझा रेलवे स्टेशन के पास जमुई बीड़ी श्रमिक यूनियन (एआईयूटीयूसी से संबद्ध) की ओर से सभा की गयी और सभा को कॉ० मिश्री सिंह ने संबोधित किया।

हाजीपुर, वैशाली- एआईयूटीयूसी, एटक, सीटू व एक्टू के संयुक्त तत्वावधान में मजदूरों का जुलूस निकाला गया जो बाद में सभा में तब्दील हो गया। सभा को एसयूसीआई (सी) बिहार राज्य कमिटी के सदस्य कॉ० इंद्रदेव राय ने संबोधित किया।

भागलपुर- एआईयूटीयूसी, एटक, सीटू व एक्टू द्वारा संयुक्त सभा की गयी। इस सभा को एआईयूटीयूसी की ओर से कॉ० दीपक कुमार मंडल व कॉ० रोशन कुमार ने संबोधित किया।

बेगूसराय- बेगूसराय में एआईयूटीयूसी से संबद्ध बिहार राज्य मध्याह्न भोजन कर्मी संघ की ओर से सैकड़ों कर्मियों को लेकर सभा की गयी। इस सभा को एस यू सी आई (सी) बिहार राज्य सचिव मंडल सदस्य कॉ० राजकुमार चौधरी ने संबोधित किया।

औरंगाबाद- एआईयूटीयूसी से संबद्ध एनपीजीसी वर्कर्स यूनियन की ओर से ससना गेट नं० 1 पर मजदूरों की एक सभा हुई, जिसमें लगभग 250 मजदूर शामिल थे। सभा को एसयूसीआई (सी) बिहार राज्य कमिटी सदस्य कॉ० रमाधीन सिंह, सचिव मंडल सदस्य कॉ० उमाशंकर वर्मा व युगल ठाकुर ने संबोधित किया।

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के दौरान का मेहनताना देने की मांग पर

सड़कों पर उतरी मिड-डे मील कार्यकता

भिवानी : अपनी मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हुए मिड-डे मील कार्यकर्ता

भिवानी (हरियाणा) : एआईयूटीयूसी से संबद्ध मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन के बैनर तले मिड-डे मील कर्मियों ने 23 मई को अपनी ज्वलंत मांगों को लेकर शहर में प्रदर्शन किया और उपायुक्त, भिवानी के जरिये मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इससे पहले मिड-डे-मील कार्यकर्ता चेतराम प्रजापति धर्मशाला में इकट्ठी हुई और सराय चौपटा, घण्टाघर होते हुए जोरदार नारेबाजी करती हुई लघु सचिवालय पहुंची।

स्कूल के अन्य कर्मचारियों की तरह मिड-डे मील कर्मियों को भी गर्मियों की व अन्य छुट्टियों के दौरान का मेहनताना देने, मिड-डे मील कर्मियों की नौकरी की सुरक्षा प्रदान करने, बिना उचित कारण के किसी कुक को न हटाने, मिड-डे मील कर्मियों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, हाजरी रजिस्टर लगाया जाने, 18000रु. मासिक न्यूनतम वेतन देने, तब तक घोषित न्यूनतम वेतन जितना मासिक मेहनताना तो कम से कम नियमित रूप से निर्धारित तिथि पर देने, मिड-डे मील कार्यकर्ताओं को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने, साल में कम से कम दो वर्दियां देने, जरूरी काम होने पर या बीमार पड़ने पर सवेतन अवकाश अन्य कर्मचारियों के समान दिया जाने, मिड-डे मील कार्यकताओं के गम्भीर रूप से बीमार पड़ने या दुर्घटना में घायल होने पर मुफ्त इलाज व आर्थिक सहायता और मौत होने पर मृतक के परिवार को उचित मुआवजा दिया जाने आदि की मांग ज्ञापन में की गई।

यूनियन की नेत्री राजबाला पालवास ने बताया कि इस स्कीम में उन्हें केवल 2500 रुपये मासिक मानदेय मिलता है और गर्मियों व अन्य छुट्टियों का तो यह मेहनताना भी नहीं दिया जाता है। मिड-डे मील कार्यकर्ताओं सहित सभी स्कीम वर्करों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना, न्यूनतम वेतन 18000 रु. मासिक देनाा चाहिए।

एआईयूटीयूसी के जिला कमेटी सदस्य राजकुमार, धर्मवीर सिंह और यूनियन की जिला सचिव कौशल्या दुल्हेड़ी ने भी सम्बोधित किया और सरकार से मिड-डे मील कार्यकर्ताओं की समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करने का अनुरोध किया। प्रदर्शन में मीरा देवराला, कमलेश मनोरमा शीला लोहड़वाड़ा, संगीता पालवास, मंजू, सरोज व शीला सुंगरपुर, सुमन, संगीता व भूली भिवानी, राजबालाश शीला, रोशनी व राजवंती धीराणा, संतोष कैरू, आदि अनेक कार्यकर्ता शामिल रही।

रेवाड़ी : मिड-डे मील कार्यकर्ताओं ने 23 मई को शहर में जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व सरस्वती देवी, मुन्नी देवी, कृष्णा देवी, निर्मला देवी ने किया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जब स्कूल में काम करने वाले चपरासी से लेकर मुख्याध्यापक तक को छुट्टियों का वेतन दिया जाता है, तो उन्हें क्यों नहीं? प्रदर्शन करने वाली कार्यकर्ताओं में राजबाला, सुनीता, सरोज, शीला, दीपा, रामकला, पिश्ता देवी, कमलेश, सुमन आदि भी शामिल थी।

मई दिवस पर किया शहीदों को याद

देवास (म.प्र.) : 1 मई मजदूर दिवस के अवसर पर स्थानीय एलआयसी शाखा क्र.2 के प्रांगण में बीमा, बैंक, बीएसएनएल, सीटू एवं एआईयूटीयूसी के संयुक्त तत्वावधान में सभा कर मई दिवस के शहीदों को याद किया गया। इस संयुक्त सभा को सम्बोधित करते हुए एलआयसी यूनियन के अध्यक्ष मोहन जोशी ने बताया कि 1 मई का इतिहास मजदूर-कर्मचारियों के लिए गौरवपूर्ण इतिहास है और इस आंदोलन से हमें सीख लेते हुए वर्तमान में श्रमिक-विरोधी कानूनों के खिलाफ संघर्ष तेज करना चाहिए।

सभा को एआईयूटीयूसी के राज्य समिति सदस्य कॉमरेड हिमांशु श्रीवास्तव, बैंक यूनियन की ओर से नरेन्द्र, कामरेड मेहमूद इंदौरी, मनीष गौड़, वाणी जाधव, गुंजन शर्मा, मनोज पंवार एलआयसी एजेंट आदि ने सम्बोधित किया। अंत में आभार बैंक से जय शर्मा ने माना। कार्यक्रम की शुरूआत में एआईयूटीयूसी कार्यकर्ताओं द्वारा जन गीत प्रस्तुत किए गए। सभी ने गगनभेदी नारों के साथ सरकार को श्रम कानूनों में मजदूर-विरोधी हेरफेर करने से बाज आने की चेतावनी दी।

सभा में विक्रांत बनजारे, ईश्वर मोदी, जानकीलाल, संध्या शर्मा, अब्दुल, विनोद प्रजापति, संजय, सुनिता महाजन आदि उपस्थित थे।

महान नवम्बर क्रान्ति ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

को पराजित किया, देश-देश में साम्राज्यवाद-विरोधी मुक्ति आन्दोलनों की मदद की, पूँजीवादी विश्व व्यवस्था के खिलाफ समाजवादी विश्व व्यवस्था को नेतृत्व दिया, सुदृढ़ शक्तिशाली समाजवादी अर्थव्यवस्था निर्मित की, वह ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जबरदस्त तरक्की करते हुए दुनिया के मुक्तिकामी लोगों के सामने प्रेरणा स्रोत के तौर पर उभर कर आया। लेकिन गगनचुम्बी इस सफलता के बावजूद कॉमरेड स्तालिन की आँखों की नीन्द उड़ गयी थी। वे बेचैन थे। वे जानते थे लेनिन की वह शिक्षा–"पूँजीवाद से साम्यवाद में संक्रमण एक समग्र ऐतिहासिक युग का मामला है। यह युग जब तक खत्म नहीं हो जाता, तब तक शोषक सत्ता में दोबारा आने की उम्मीद करेंगे ही और यह उम्मीद दोबारा सत्तारूढ़ होने की कोशिश में तब्दील होगी।" (स. रचनाएं, खण्ड 28, अं. सं. पृ. 254) इसके प्रतिरोध का उपाय क्या है? इस मामले में भी लेनिन ने सीख दी थी कि इसका उपाय है, "सर्वहारा अधिनायकत्व के आधार पर दीर्घस्थायी संघर्ष, सर्वहारा का खुद को नये सिरे से शिक्षित करने का संघर्ष।" (सं. रचनाएं, 31, अं. सं., पृ. 115) नये सिरे से शिक्षित करने के इस संघर्ष में विचारधारा की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका थी, इस बात से कॉमरेड स्तालिन अनभिज्ञ नहीं थे। वे इस मामले में सोवियत यूनियन की कमजोरी से भी अनभिज्ञ नहीं थे। वे कहा करते थे कि सोवियत यूनियन में वैचारिक क्षेत्र में समय की जरूरत के अनुरूप स्तर की कमी है। वे जानते थे कि इन सब विजयों के बावजूद सोवियत समाजवाद को मुसीबतों से निजात नहीं मिल पायी है। क्योंकि इस समाज में अभी भी बाहर से पूँजीवादी देशों द्वारा ...समाजवाद-विरोधी विभिन्न ध्यान-धारणाओं और मनोवृत्तियों की घुसपैठ करायी जा सकती है। व्यक्तिगत सम्पत्तिजनित इस मानसिकता और नैतिकता का खात्मा करना होगा। इसलिए इस क्षेत्र में पूँजीवादी मानसिकता के अवशेषों, संशयों और पुराने समाज से प्राप्त नुकसानदेह परम्पराओं के प्रभाव से जनमानस को मुक्त रखने के मामले में पार्टी की वैचारिक चर्चा को अवश्य ही महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इसके लिए सदस्यों के राजनैतिक ज्ञान का स्तर ऊँचा उठाने की जरूरत है। उनकी चेतना को सर्वहारा वर्ग की सोच से लैस करने और उसे धारदार बनाने की जरूरत है।

लेकिन पार्टी के कार्यकर्ता-नेताओं की चेतना के स्तर की हालत कहाँ पहुँच गई है, इसके बारे में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सोवियत यूनियन में समाजवाद की आर्थिक समस्याए' में (1952) में उन्होंने लिखा था, "हमारे साथ, नेतृत्वकारी केन्द्रीय शक्ति के साथ, हर साल हजारों नये और तरुण लोग जुड़ जाते हैं जिनके हृदय में यह प्रबल कामना रहती है कि वे हमारी मदद करें और जिनके हृदय में यह प्रबल कामना रहती है कि वे अपना जौहर दिखायें। लेकिन जिनके पास काफी मार्क्सवादी शिक्षा नहीं है जो उन बहुत सी सच्चाइयों से अपरिचित हैं जिन्हें हम बखूबी जानते हैं, और इसलिए उन्हें मजबूर होकर अँधेरे में हाथ-पैर मार कर टटोलना पड़ता है। सोवियत सरकार की बड़ी भारी सफलताओं ने इन्हें चौंका दिया है, सोवियत व्यवस्था की अनुपम सफलताओं से वे चकित हैं और वे कल्पना करने लगे हैं कि सोवियत सरकार "कुछ भी कर" सकती है, "कोई भी चीज उसकी शक्ति से परे नहीं है", "वह वैज्ञानिक नियम मंसूख कर सकती है और नये नियम रच सकती है।" इन सब कॉमरेडों से हम कैसे पेश आयें? मार्क्सवाद- लेनिनवाद में उन्हें कैसे शिक्षित करें?" (पृ. 8-9)

इन कमजोरियों का विस्तार से वर्णन हम महान स्तालिन के नेतृत्व में और उनके सुयोग्य संचालन में हुई 19वीं पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट में भी पाते हैं, "यह वास्तव में सत्य है कि हमने युद्ध जीता है और युद्ध के बाद से आर्थिक विकास के क्षेत्र में हमने बड़ी जबरदस्त उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इसके फलस्वरूप पार्टी संगठन, आर्थिक प्रतिष्ठानों व अन्य संगठनों के काम में, आर्थिक पुनर्निर्माण और दूसरे सांगठनिक कामों के क्षेत्र में पार्टी कार्यकर्ताओं में अपनी भूल-भ्रान्तियों व त्रुटियों को न देखने-दिखाने की प्रवृत्ति आ गई है। ये भी तथ्य हैं जो दिखाते हैं कि उपलब्धियाँ हासिल करने के फलस्वरूप पार्टी के कार्यकर्ताओं में आत्मसंतुष्टि की प्रवृत्ति पैदा हो गई है। वे ऐसा दिखावा करते हैं कि मानो सब कुछ ठीक ठाक चल रहा है। उनके अन्दर एक संकीर्ण आत्मसंतुष्टि-आत्मतृप्ति की भावना दिखायी देती है। अतीत की कीर्ति गाथाएं सुनाकर और अतीत में की गयी अपनी सेवाओं की पूँजी पर गर्दन अकड़ा कर दिन काटने की इच्छा लोगों में दिखाई देती है। ऐसे बहुत से जिम्मेदार कार्यकर्ता हैं जो सोचते हैं–"जो जी में आए हम कर सकते हैं", 'सभी कुछ हमारी मुट्ठी में हैं", "सब ठीक-ठाक चल रहा है।", "अत: काम की त्रुटियों और भूल-भ्रान्तियों को उजागर करना, संगठन में अवांछित और हानिकारक प्रवृत्तियों से लड़ना आदि अप्रिय कामों को लेकर माथापच्ची करने की कोई जरूरत नहीं है।" इस तरह की मानसिकता के अत्यन्त विनाशकारी परिणाम होते हैं। पार्टी के सदस्यों का एक हिस्सा जो राजनैतिक शिक्षा और पार्टी चेतना की दृष्टि से कम शिक्षित है, और पार्टी के नजरिये से अस्थिर तत्व है, वह इस दौरान इस हानिकारक मानसिकता से ग्रसित हो गया है। अक्सर देखा जाता है कि पार्टी, सोवियतों और आर्थिक संस्थाओं के नेता आम सभाओं, सक्रिय कार्यकर्ताओं की मीटिंगों, प्लेनरी मीटिंगों और कान्फ्रेंसों को बड़ी-बड़ी लेकिन थोथी बातें कहकर अपनी शेखी बघारने और आत्म प्रशंसा करने की महफिलों में बदल डालते हैं। इसके फलस्वरूप काम की भूल-भ्रान्तियाँ और सीमाबद्धताएं सामने नहीं आ पाती हैं, कार्यकर्ता व नेता अपने अन्दर घर किये हुए रोगों और कमजोरी के पहलुओं को देख नहीं पाते हैं। नेता आलोचना से रूबरू नहीं होते हैं। इसके फलस्वरूप आत्म सन्तुष्टि और संकीर्ण आत्मतृप्ति का रुझान बढ़ता जाता है। पार्टी संगठन में कर्त्तव्य की अवेहलना की मनोभावना घुस गयी है। देखा जा रहा है कि पार्टी, सोवियतों, विभिन्न आर्थिक संस्थाओं व दूसरे संगठनों के कार्यकारी पदाधिकारियों ने अनेक क्षेत्रों में सतर्कता में ढील दे दी है। उनके चारों और क्या हो रहा है–यह उन्हें नजर ही नहीं आता है। यहाँ तक कि पार्टी और राज्य सम्बन्धी गोपनीय विषयों का भेद भी बाहर खोल देने के मामले सामने आए हैं। कुछ-कुछ जिम्मेदार कार्यकर्ता आर्थिक कामकाज में बहुत अधिक फंसे रहते हैं। सफलताओं से उनका दिमाग इतना घूम जाता है कि वे यह बात भी भूलने लगते हैं कि अभी भी पूँजीवाद ने चारों ओर से हमें घेर रखा है। वे भूल जाते हैं कि सोवियत राज्य के शत्रु अपने एजेण्ट हमारे अन्दर घुसा देने और सोवियत समाज में अस्थिर तत्वों को इस्तेमाल करके अपना अनिष्टकर उद्देश्य पूरा करने की लगातार कुचेष्टा कर रहे हैं।" (जी. मलेन्कोव की रिपोर्ट, पृ. 115-116)

सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता-कार्यकर्ताओं का सैद्धान्तिक स्तर किस तरह गिर रहा है, इस बारे में चर्चा करते हुए कॉमरेड स्तालिन ने कहा था, "हम पहली, वरिष्ठ पीढ़ी के बोल्शेविकों की सैद्धान्तिक तौर पर बुनियाद बहुत अच्छी थी, हमने *कैपिटल* (*पूँजी*) को याद कर लिया था, संक्षेप में मूल बात कह पाते थे, तर्क कर पाते थे और एक दूसरे की जाँच-परख कर लेते थे। यही थी हमारी शक्ति। इसने हमारी भरपूर मदद की थी। दूसरी पीढ़ी के बोल्शेविक कम तैयार थे। वे व्यावहारिक काम और समाजवाद के निर्माण कार्य में व्यस्त थे। वे मार्क्सवाद का अध्ययन पुस्तकों की मदद से करते थे।

"तीसरी पीढ़ी के बोल्शेविकों ने प्रचार के पर्चे और समाचार पत्र पढ़कर ही खुद को तैयार किया है। ऐसी खुराक उन्हें देनी होगी जो आसानी से हजम होने वाली हो। इनमें से ज्यादातर ही मार्क्स और लेनिन को पढ़कर नहीं, बल्कि कोटेशनों को मुँह जबानी कण्ठस्थ करके पले-बढ़े हैं। अगर यही चलता रहा तो इन लोगों का अंध:पतन हो जाएगा। वे फैसला ले लेंगे कि जब हम समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं, तो *कैपिटल* की क्या जरूरत है? यह घोर अंध:पतन को न्योता देना है। इसका मायने है मौत। अगर इससे जरा भी बचना है तो आर्थिक समझदारी का स्तर उन्नत करना जरूरी है।" (एथॉन पोलॉक, स्तालिन, सोवियत विज्ञान व युद्ध, पृ. 182)

कॉमरेड स्तालिन ने बखूबी समझ लिया था कि पार्टी के नेता-कार्यकर्ताओं की वैचारिक चेतना का यह निम्न स्तर भविष्य में समाजवाद को खतरे में डाल सकता है। इसी वजह से उन्होंने ज्ञान के सभी क्षेत्रों को समेटते हुए चौतरफा संघर्ष छेड़ दिया था। केवल आर्थिक-राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि साथ ही दर्शन-विज्ञान के क्षेत्र को भी जोड़ते हुए उनका यह संघर्ष व्याप्त हो गया था। इसीलिए उन्होंने विज्ञान के नाना आविष्कारों की द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद सम्मत समझदारी निर्मित करने की कोशिश की थी। वे चाहते थे, "विज्ञान फले-फूले, विकसित हो–ऐसा विज्ञान जिससे वह खुद जनता से कट कर न रह, जिस जनता की सेवा करने के लिए तैयार है, उससे खुद को दूर न हटाकर रखे, ऐसा विज्ञान जो मजबूरी से नहीं, बल्कि स्वेच्छा से स्वत: प्रेरित ढंग से जनता की सेवा करे। ...

"विज्ञान फले-फूले, विकसित हो–ऐसा विज्ञान जिसके साधक विज्ञान में सुप्रतिष्ठित परम्पराओं की शक्ति और तात्पर्य समझ सकें और विज्ञान के स्वार्थ में सुचारू ढंग से उसका इस्तेमाल कर सकें। लेकिन साथ ही साथ इन सब परम्पराओं का जर-खरीद गुलाम हो जाने से भी इन्कार कर दें। ऐसा विज्ञान जिसका प्राचीन परम्पराओं, मानदण्डों और प्रथाओं को तोड़ने का साहस, हिम्मत-हौंसला और वफादारी हो, खास कर जब वे अचल या जड़ हो जायें, जब वे प्रगति पथ में रुकावट की तरह काम करने लगें, ऐसा विज्ञान जो नयी परम्परा, नये मानदण्ड, नये रास्ते तैयार कर सके।" (इन्टरनेशनल बुक रिव्यु, नं. 1-2 मार्क्स मेमोरियल लाइब्रेरी, 1938)

स्तालिन जानते थे कि अफसरशाही ढंग से फरमान जारी करके इस तरह का विज्ञान विकसित नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने कहा था, "विभिन्न मतों के बीच संघर्ष के बिना, आलोचना की आजादी के बिना कोई भी विज्ञान विकसित नहीं हो सकता।" इसलिए युद्ध से तबाह देश का पुनर्निर्माण करने के साथ-साथ इस संघर्ष में भी–यानी आलोचना-समालोचना के संघर्ष में भी कॉमरेड स्तालिन ने समस्त पार्टी और जनता को शामिल करने की कोशिश की थी। 'बन्द द्वार' के तरीके से विवाद का हल खोजने की बजाय, विवाद का हल खुल्लमखुल्ला, खुली आलोचना-समालोचना के द्वारा खोजना होगा। इसके फलस्वरूप सत्य धारणा पर पहुँचने का काम जहाँ और भी आसान हो जाएगा, जनता के चिंतन का स्तर उन्नत होगा। वहीं यह समझने में जनता को सुविधा होगी कि समाजवाद का, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का लबादा ओढ़ कर, कहाँ और किस तरह भाववादी बुर्जुआ चिंतन-भावना ज्ञान जगत में ताकत बटोरकर संशोधनवादी चिंतन को मजबूत कर रही है, समाजवाद का सर्वनाश करने की कोशिश कर रही है।

कॉमरेड स्तालिन मानते थे कि एकमात्र इसी रास्ते सोवियत समाजवाद के अन्दर जो वैचारिक कमजोरी दिखायी दे रही है उसे दूर किया जा सकता है। इसी रास्ते सोवियत समाजवाद को सुदृढ़ और शक्तिशाली किया जा सकता है, बुर्जुआ भावना-धारणा के नुकसानदेह प्रभाव से उसे बचाया जा सकता है। इससे बखूबी समझा जा सकता है कि संशोधनवाद के हाथों से सोवियत समाजवाद की रक्षा करने के लिए कॉमरेड स्तालिन ने एक चौतरफा पहलकदमी लेने की कोशिश की थी, ज्ञान-विज्ञान के नाना क्षेत्रों में यथार्थ मार्क्सवादी-लेनिनवादी धारणा निर्मित करने में दुनिया के मेहनतकश जनता के हाथों में संघर्ष का सही मायने में युगोपयोगी हथियार थमा देने की कोशिश की थी। कॉमरेड स्तालिन जानते थे कि मतादर्श/विचारधारा को जीवन का यथार्थ प्रतिफलन होना चाहिए। जीवन आगे बढ़ता जा रहा है, मतादर्श/विचारधारा को भी उसके साथ सामंजस्य रखते हुए आगे बढ़ते जाना होगा। वरना उसका अध:पतन अवश्यम्भावी है जिसका मतलब होगा मौत–(दैट विल मीन डेथ)। स्तालिन ने इस पतन से सोवियत समाजवाद को बचाने की जी-जान से कोशिश की थी। लेकिन वे अपने इस प्रयास में सफल नहीं हो पाये। सोवियत समाजवाद को उसकी चेतनागत दुर्बलता से मुक्त नहीं किया जा सका। चेतना के इस तुलनात्मक नीचे स्तर का फायदा उठाकर धीरे-धीरे संशोधनवादी रुझान ने पार्टी और समाजवाद को कमजोर कर दिया और आखिरकार प्रतिक्रान्ति के जरिए सोवियत समाजवाद को ध्वस्त कर पूँजीवाद को पुनर्स्थापित कर दिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महान नवम्बर क्रान्ति ...

(पृष्ठ 6 का शेष)

इस प्रसंग में एक और महान मार्क्सवादी चिंतनकार की बात हमें याद करनी है। वे थे सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष। दूसरे विश्व युद्ध में सोवियत यूनियन की जीत के बाद दुनिया भर में जब समाजवाद की जयजयकार हो रही थी, तब उन्होंने अपने प्रज्ञादीप्त विश्लेषण में दिखाया था, "विश्व साम्यवादी खेमे का मौजूदा नेतृत्व ज्यादातर यान्त्रिक चिंतन पद्धति से प्रभावित है।" (सं. र. 1, पृ. 2) इस यान्त्रिक चिंतन पद्धति के साथ चेतना का निम्न स्तर सीधा जुड़ा हुआ है। चेतना के इस निम्न स्तर ने ही सोवियत यूनियन में संशोधनवाद पैदा किया था। इस प्रसंग में कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था, "संशोधनवाद के आने के परिपूरक आर्थिक कारक वहाँ मौजूद थे, इसीलिए वहाँ संशोधनवाद आ सका। ...राजनैतिक चेतना में निम्न स्तर ने इस रुझान को बढ़ावा दिया। ...इसे रोकने के लिए एक ओर पार्टी के अंदर निरंतर सांस्कृतिक क्रांति और वैचारिक संघर्ष चलाकर वैचारिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में चेतना का उन्नत स्तर बरकरार रखने की, दूसरी ओर सिर्फ आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि मानव जीवन को केन्द्र कर बदले हुए परिवेश में उभर कर आ रही नयी-नयी समस्याओं का मुकाबला करने के लिए मार्क्सवाद को लगातार समृद्ध करने की जरूरत थी।" (वही, हिन्दी सं. पृ. 303-305)

कॉमरेड शिवदास घोष ने यह भी कहा था, "चेतना का स्तर उन्नत न हो, तो समाजवादी समाज ने लोगों के जीवन का जो स्तर ऊँचा उठाया है, उसे मेहनतकश जनता सुविधा मानने लगती है। इससे समाजवादी व्यक्तिवाद पैदा हो जाता है—जो चरित्र में बुर्जुआ व्यक्तिवाद जैसा ही होता है। यह अन्ततः समाजवाद को भीतर से घुन की तरह चट कर जाता है, उसे ढहा देता है।"

कॉमरेड शिवदास घोष के प्रज्ञादीप्त विश्लेषण ने सोवियत समाजवाद के अन्दर जो समस्या थी, उसके बारे में हमें आगाह कर दिया था। उन्होंने कहा था, "चेतना का निम्न स्तर रहने के चलते ये सारी चीजें हो रही हैं ...इससे बचने का उपाय है पार्टी के अंदर निरंतर वैचारिक संघर्ष चलाकर वैचारिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में चेतना के उन्नत स्तर को बरकरार रखना।...सिर्फ आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि मानव जीवन को केन्द्र कर नये माहौल में, नये रूप में, जो नयी-नयी समस्याएँ दिखाई दे रही हैं, उनके साथ संगति रखते हुए मार्क्सवाद को निरंतर समृद्ध करने की जरूरत है। ...

सामाजिक-आर्थिक-नैतिक और रुचिगत व दार्शनिक क्षेत्र में जिन मूल्यबोधों ने तथा कम्युनिस्ट आंदोलन को संचालन लेनिनवाद की जिन मूल नीतियों ने किया है, उनमें से किन-किन मूल्यबोधों और नीतियों की आज भी उपयोगिता बची हुई है और किन-किन मूल्यबोधों और नीतियों की उपयोगिता खत्म हो चुकी है—इसे तय करने की जरूरत है। उसके आधार पर, जिन नीतियों की आज भी उपयोगिता बनी हुई है, उन्हें केन्द्र कर पहले पार्टी के अंदर और फिर पार्टी तथा जनता के बीच पूरी तरह से वैचारिक एकरूपता कायम करने के लिए वैचारिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में जोरदार क्रांतिकारी संघर्ष शुरू करने की जरूरत है।" (सं रचनाएं, खण्ड-1, पृ. 293-94)। लेकिन गहरी व्यथा-वेदना की बात होने पर भी यह बात सच है कि महान लेनिन-स्तालिन की चेतावनी के बावजूद सोवियत समाजवाद में यह कमजोरी दूर नहीं की जा सकी। नतीजतन स्टालिन की मृत्यु के बाद ख्रुश्चेव के नेतृत्व ने सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) की हुई 20वीं कांग्रेस से लेनिन-स्तालिन की परम्परा और उत्तराधिकार को धत्ता बता कर संशोधनवादी रास्ते पर चलना शुरू कर दिया था और उसके फलस्वरूप अन्दरूनी क्षेत्र में पूँजीवाद के प्रभाव, पूँजीवादी संस्कृति और नैतिकता के प्रभाव ने सोवियत यूनियन में समाजवाद को अपनी गिरफ्त में ले लिया। इस संशोधनवाद ने धीरे-धीरे शक्ति संचित करते-करते अन्ततः सोवियत यूनियन को ध्वस्त कर दिया, प्रतिक्रान्ति के जरिए वहाँ पूँजीवाद को दोबारा ला दिया।

लेकिन मजदूर वर्ग की यह हार क्या परम है? समाजवाद ढह जाना ही क्या अन्तिम बात है? क्रान्ति का इतिहास हमें वह सीख नहीं देता है। महान लेनिन की शिक्षाओं के अनुसार मार्क्सवादी जानते हैं कि समाजवाद कायम होने से ही वर्ग-संघर्ष लुप्त नहीं हो जाता। सत्ता से हटा दिया गया बुर्जुआ वर्ग दोबारा फिर सत्ता में आने की कोशिश करता है। जितने दिन गुजरते जाते हैं, समाजवाद जितना ताकतवर होता जाता है, उतना ही उनका प्रतिरोध तीव्रतर होता जाता है, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता जाता है। उत्पादन में व्यक्तिगत सम्पत्ति के तरह-तरह के रूपों में जिस तरह उनकी जड़ें रहती हैं, उसी तरह मनुष्यों की पुरानी आदतों, आचरण, रुचि-संस्कृति में उनका अस्तित्व रहता है। लेनिन ने कहा था कि करोड़ों-करोड़ लोगों की आदत की शक्ति बड़ी भयंकर होती है। उसे एक झटके में दूर नहीं किया जा सकता। इसके लिए दीर्घस्थायी बहुत ही कठोर संघर्ष की जरूरत होती है, ज्ञान-विज्ञान के विकास के साथ सामंजस्यपूर्ण उन्नततर मतादर्श/विचारधारा की जरूरत होती है। मार्क्सवादी चिन्तनकार जानते थे कि यह सचेत सतर्क संघर्ष नहीं रहा, तो समाजवाद खतरे में पड़ जाएगा, प्रतिक्रान्ति की सम्भावना दिखायी देगी, यहाँ तक कि सत्ता से हटा दिया गया बुर्जुआ वर्ग फिर दोबारा सत्ता में लौट भी आ सकता है।

इसलिए सोवियत यूनियन में समाजवाद ढह कर पूँजीवाद पुनर्स्थापित हो जाने का मामला अत्यन्त दुःखदायी होते हुए भी मार्क्सवादी ज्ञान भण्डार में इस सम्भावना की बात अनजानी नहीं थी और इसी वजह से दुनिया के मजदूर वर्ग को मार्क्सवादी चिंतनकारों ने बार-बार इस बारे में सतर्क किया है। इसी वजह से दुःखद होते हुए भी समाजवाद को लगे इस धक्के से सही मार्क्सवादी हैरान नहीं हुए, भौचक्के भी नहीं हुए।

क्योंकि वे जानते थे कि समाजवाद की यह हार सामयिक है, क्षणिक है। पूँजीवाद की यह जीत भी क्षणिक है। दुनिया का मजदूर वर्ग दोबारा फिर सिर उठायेगा, इस हार से सीख लेगा, पूँजीवाद के किले की ईंट से ईंट बजाकर इसे चकनाचूर करके दुनिया भर में फिर समाजवाद कायम करेगा।

इसके आसार इसी बीच नजर आने लगे हैं। जो साम्राज्यवादी शक्तियाँ सोवियत समाजवाद के पतन पर हर्षित हुई थी, वे अब मृत्यु यंत्रणा से छटपटा रही हैं। उनकी अर्थव्यवस्था में मन्दी अब सर्वव्यापी है। बुर्जुआ राष्ट्र अब दिवालिया होते जा रहे हैं। हर जगह मिलें और कारखानें बन्द होते जा रहे हैं। सभी पूँजीवादी देशों में बेरोजगारों की फौज खड़ी होती जा रही है। बाजार संकट बहुत ही गहराया हुआ है। संकुचित विश्व बाजार को लेकर खींचातानी चल रही है। इस बाजार के बंटवारे को लेकर साम्राज्यवादियों के बीच संघर्ष प्रतिदिन जारी है। इसे वे 'आर्थिक युद्ध' (व्यापारिक युद्ध) कह रहे हैं। किसी न किसी दिन यह व्यापारिक युद्ध सामरिक युद्ध में तब्दील हो जा सकता है।

साथ ही साथ जनता में भुखमरी और गरीबी बढ़ती जा रही है। काम से निकाले गये मजदूर और उजड़े हुए किसान रास्ते के भिखारी बनते जा रहे हैं, औरतें इज्जत-आबरू लुटाकर देह व्यापार की घिनौनी राह पर कदम बढ़ाने को मजबूर की जा रही हैं। बच्चों की तस्करी-महिलाओं की खरीद-बेच का अवैध धंधा बेरोकटोक जारी है। सवाल उठता है कि दुनिया के 500 करोड़ भूखे लोगों को पूँजीवाद ने क्या दिया? जवाब एक ही है—भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा और सांस्कृतिक पतन। लोग इससे निजात पाना चाहेंगे ही। लोग पूछेंगे, सवाल करेंगे, जवाब खोजेंगे, जिन्दा रहने का रास्ता तलाशेंगे और अन्ततः देख पायेंगे कि वैज्ञानिक समाजवाद के सिवा उनके सामने दूसरा कोई वैकल्पिक रास्ता खुला नहीं है।

हम देख सकते हैं कि साम्राज्यवादी-पूँजीवादी शासन-शोषण के खिलाफ दुनिया के मेहनतकश आम लोगों का रोष-आक्रोश, विद्रोह फूट पड़ा है। केवल रूस, अफ्रीका व लातिन अमेरिका के आम लोगों का ही नहीं, बल्कि यूरोप-अमेरिका के मेहनतकश आम लोगों का भी रोष फूट पड़ा है। वे सड़कों पर उतर आये हैं। वे नारे लगा रहे हैं—पूँजीवाद का नाश हो, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, समाजवाद जिन्दाबाद। इन जुझारू लोगों को एक दिन वैज्ञानिक समाजवाद की सही शिक्षा की जानकारी मिलेगी ही। उस शिक्षा के आधार पर वे देश-देश में मुक्ति-संघर्ष गठित कर साम्राज्यवाद-पूँजीवाद के किले को चकनाचूर कर देंगे। फिर दुनिया भर में कायम होगा समाजवाद। इसी रास्ते पर चलते हुए मानव जाति को हर तरह के शोषण-उत्पीड़न से मुक्ति मिलेगी। जरूरत के राज से आजादी के राज में पदार्पण होगा। वर्गहीन समाज कायम होगा। सामाजिक विकास के नियम की यही है अवश्यम्भावी परिणति। (समाप्त)

मार्क्स की 200वीं जयंती पर सेमिनार आयोजित

जमशेदपुर (झारखण्ड) : महान विचारक कार्ल मार्क्स की दूसरी जन्म शताब्दी के अवसर पर 5 मई को यहां एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में बहुत सारे लोगों ने हिस्सा लिया।

इसका विषय था : सोवियत यूनियन में समाजवाद की पराजय का कारण। इसमें सीपीआई, सीपीएम, एसयूसीआई (सी), भाकपा माले, सीपीआई एम एल आदि संगठनों के नेताओं ने अपने विचार रखे।

पार्टी स्थापना दिवस पर आम सभा का आयोजन

रांची (झारखण्ड) : एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के 70वें स्थापना दिवस पर यहां एक आम सभा आयोजित की गई।

सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) झारखण्ड राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड रबिन समाजपति ने की। मुख्य वक्ता पार्टी के पालिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रणजीत धर थे।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Publication : June 5, 2017

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 से 21 जून, 2017

कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर सभा का आयोजन

कार्ल मार्क्स को दी श्रद्धांजली

कोलकाता: सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रभास घोष

कोलकाता (प.बं.) : 7 मई को कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर कोलकाता यूनिवर्सिटी इन्स्टीच्यूट हाल में आयोजित सभा में वक्तव्य रखते हुए एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष। साथ में पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रणजीत धर, माणिक मुखर्जी, असित भट्टाचार्य और बांग्लादेश समाजतांत्रिक दल (मार्क्सवादी) के महासचिव कॉमरेड मोबीनुल हैदर चौधरी। सभा की अध्यक्षता केन्द्रीय कमेटी सदस्य, राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु ने की। केन्द्रीय कमेटी के अन्य सदस्य भी मंच पर विराजमान थे। आमंत्रित अतिथि के रूप में सीपीआई(एम) केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड श्रीदीप भट्टाचार्य और राज्य कमेटी सदस्य, कार्यालय सचिव कॉमरेड सुखेन्दु पाणिग्राही भी मंच पर बैठे थे। हाल खचाखच भरा था। अन्दर जगह न बचने पर हाल के बाहर लॉन और रास्ते में बैठ कर बहुत सारे लोगों को भाषण सुनने पड़े।

डब्ल्यू एफ टी यू की एशिया पेसिफिक रीजनल बैठक में एआईयूटीयूसी ने की शिरकत

चेन्नई (तमिलनाडु) : वर्ल्ड फैडरेशन आफ ट्रेड यूनियन्स (डब्ल्यू एफ टी यू) की एशिया पेसिफिक रीजनल मीटिंग 19–20 मई को चन्नई में हुई। इसमें डब्ल्यू एफ टी यू से सम्बद्ध भारत की छः केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों (एटक, सीटू, एआईयूटीयूसी, यूटीयूसी और एआईसीसीटीयू) के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, ईरान, वियतनाम, लाओस तथा मलेशिया के विभिन्न ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। एआईयूटीयूसी की ओर से अखिल भारतीय सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड रमेश शर्मा की अगुवाई में 6 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने हिस्सा लिया। 19 मई मीटिंग में स्वागत सम्बोधन एआईबीईए के महासचिव कॉमरेड सी. एच. वेकटाचलम ने रखा तथा एशिया पेसिफिक रीजन की रिपोर्ट कॉमरेड एच. महादेवन द्वारा प्रस्तुत की गई। 20 मई को डब्ल्यू एफ टी यू महासचिव कॉमरेड जार्ज मार्विकोस ने सभा को सम्बोधित किया। दोनों दिन विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने रिपोर्ट पर चर्चा की और अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। एआईयूटीयूसी की ओर से कॉमरेड रमेश शर्मा ने वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसे नीचे दिया जा रहा है। सभा के अंत में चन्नेई घोषणा के नाम से एक दस्तावेज सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसमें आगे आने वाले संघर्षो व कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

एआईयूटीयूसी का वक्तव्य

प्रिय कॉमरेडो और दोस्तो, सर्वप्रथम अपने संगठन एआईयूटीयूसी की ओर से मैं बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, ईरान, वियतनाम, लाओस, मलेशिया और भारत के विभिन्न भागों से आये प्रतिनिधियों का तहेदिल से स्वागत करता हूँ। साथियो, विश्व आज गहन संकट के दौर में है। यह संकट 1930 के दशक से भी गहरा है जिसके चलते द्वितीय विश्व युद्ध हुआ था। विश्व साम्राज्यवादी खेमे द्वारा डिजाइन की गई भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से इस संकट से उबरने के लिए उठाये गये कदम भी बुरी तरह फेल हो गये हैं। इस संकट का आयाम ऐसा है कि किसी भी वर्कर की कोई रोजगार की गारन्टी नहीं रह गयी है। सरकारी और संगठित क्षेत्रों, सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में स्थायी प्रकृति के कामों का ठेकेदारीकरण हो रहा है। स्थिति इस मुकाम पर पहुँच गई है कि संगठित क्षेत्र में 70 प्रतिशत कामगार कांट्रेक्ट वर्कर्स हैं। सिर्फ रोजगार सुरक्षा के मामले में ही नहीं बल्कि मजदूरी और अन्य लाभों के मामले में भी ये पूरी तरह वंचना का शिकार है। हमारे देश में हर साल लाखों किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं क्योंकि वे जो उत्पादन करते हैं उसका उचित समर्थन मूल्य उनको नही मिलता है। शिक्षा का निजीकरण कर दिया गया है। जिनके पास प्रर्याप्त धन है वही शिक्षा

चेन्नई : बैठक को सम्बोधित करते हुए कॉ. रमेश शर्मा

खरीद सकते हैं। यही हाल स्वास्थ्य सेवाओं का है। केवल जिनके पास धन है वही भाग्यशाली निजी स्वामित्व वाले सुन्दर स्पेशलिस्ट हस्पतालों में इलाज करा सकते हैं। अधिकतर लोगों को न तो उचित सफाई व्यवस्था, न ही आवास और न ही पीने का पानी उपलब्ध है। भूख की वजह से माताएं अपने बच्चों को बेचने पर मजबूर हैं और भोजन का बन्दोबस्त करने के लिए शरीर तक बेचने को मजबूर हैं। देश के अन्दर या देश के बाहर दोनों जगह प्रवासी मजदूरों को कोई कानूनी संरक्षण प्राप्त नहीं है। हर बीते दिन के साथ बच्चों की मृत्यु दर बढ़ रही है। दूसरे शब्दों में 60 करोड़ से भी अधिक हमारी मेहनतकश जनता नारकीय जीवन जीने पर मजबूर है। इन सबके अलावा जनवादी आन्दोलनों के माध्यम से मेहनतकश जनता द्वारा जो भी थोड़ी-बहुत कानूनी सुरक्षा हासिल की गयी थी उसे केन्द्र व राज्य दोनों सरकारों द्वारा खुलेआम छीना जा रहा है चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो। सरकार बदलती है लेकिन इसकी नीतियाँ नहीं बदलती है क्योंकि नीतियाँ पूँजीपति वर्ग द्वारा निर्धारित की जाती हैं और सरकारें केवल पूँजीपति वर्ग की ताबेदारी करती हैं।

इस पृष्ठभूमि में भारतीय मजदूर वर्ग के सामने एक ही लक्ष्य बचता है कि वह है सही मजदूर वर्ग के नेतृत्व के दिशा निर्देशन में दीर्घकालिक संघर्ष का रास्ता अपनाये। दुर्भाग्यवश अपने लम्बे संघर्ष के दौरान हमने जुझारूपन और श्रमिक अभिजात्यपन दोनों को विकसित किया है–श्रमिक अभिजात ही बहुतायत में है जो मजदूरों को रोटी के दो निवाले ज्यादा मिलने पर सब्र करने की कहता है जबकि मजदूर वर्ग की असल मुक्ति सर्वहारा द्वारा राजसत्ता पर कब्जा करने के माध्यम से व्यवस्था के आमूलचूल परिवर्तन पर निर्भर करती है। महान नवम्बर क्रान्ति के शताब्दी वर्ष में तमाम देशों के मजदूरों को मानव द्वारा मानव के शोषण के खात्मे और शोषणमुक्त समाज की स्थापना को अंजाम देने के लिए अपनी एकता मजबूत करनी है। इसी के साथ में समाप्त करता हूँ।

मजदूर वर्ग की एकता जिन्दाबाद
डब्ल्यूएफटीयू जिन्दाबाद

शराब नहीं, शिक्षा और रोजगार चाहिए

भोपाल – मध्य प्रदेश में शराब नहीं, शिक्षा और रोजगार चाहिए की मांग पर 22 से 27 मई तक ए.आई.एम.एस.एस, ए.आई.डी.वाय.ओ व ए.आई.डी.एस.ओ के संयुक्त तत्वावधान में शराबबंदी यात्रा का पहला चरण सम्पन्न हुआ।

इन्दौर के चन्दननगर क्षेत्र में चन्द्रशेखर आज़ाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण के बाद देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के भूतपूर्व कुलपति व जाने माने शिक्षाविद् डॉ. ए.ए. अब्बासी ने इसे झंडा दिखाकर रवाना किया। सभा में नर्मदा बचाओ आन्दोलन की नेत्री मेधा पाटेकर भी शामिल हुई। सभा को एआईएमएसएस की राज्य सचिव श्रीमती रचना अग्रवाल ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन एआईडीवायओ के राज्य सहसंयोजक कॉ. लोकेश शर्मा ने किया। इस मौके पर एक विचार व चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन जाने-माने कर्मचारी नेता श्री शिवकान्त वाजपेयी ने किया।

इसके उपरान्त शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई यात्रा राजबाड़े पहुँची जहाँ पर जाने-माने गाँधीवादी नेता श्री अनिल त्रिवेदी ने इसे सम्बोधित किया। इस तरह 22 मई को शुरू हुई यह यात्रा उज्जैन, देवास, शाजापुर, विदिशा, मण्डीदीप, अब्दुल्लागंज (रायसेन) होते हुए 27 मई को प्रदेश की राजधानी भोपाल पहुँची।

मुख्य वक्ता एस.यू.सी.आई. (सी) के राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल ने कहा कि शराबबंदी के लिए प्रदेश भर में महिलायें सड़क पर उतर कर जोरदार आन्दोलन कर रही हैं परन्तु सरकार उनकी एक न सुनकर उल्टे शराब की बिक्री बढ़ाती जा रही है। वह छात्र-युवाओं को नशे-शराब में डुबोकर उनकी नैतिक रीढ़ को खोखला करती जा रही है ताकि वे अन्याय के खिलाफ संगठित न हो सकें। उन्होंने शराब नहीं, शिक्षा व रोजगार चाहिए की मांग पर जनआन्दोलन तेज करने के लिए युवक-युवतियों का आह्वान किया।

सभा को एआईएमएसएस की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमति जॉली सरकार, एआईडीवायओ के राज्य सहसंयोजक कॉ. लोकेश शर्मा, एआईडीएसओ के प्रदेशाध्यक्ष कॉ. मुदित भट्नागर ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन एआईडीएसओ के प्रदेश सचिव कॉ. सचिन जैन ने किया। इस मौके पर मंच पर कॉ. रचना अग्रवाल (प्रदेश सचिव एआईएमएसएस) व कॉ. प्रतिज्ञा मांझी (प्रदेश सहसंयोजिका एआईडीवायओ) मौजूद थी। सभास्थल पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी दी गई।

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com

फोन नं. : 011-25726631, 9868350503